हफ़्तावार रिसाला : 206
Weekly Booklet : 206

Hazrate Usman Bhi Jannati Jannati (Hindi)

ह़ज़रते उ़स्मान भी जन्नती जन्नती

सफ़ह़ात 20

- ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ का तआ़रुफ़ 04
- ह़ज़रते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ की आप से मह़ब्बत 06
- ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी की शान में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा 09
- बैअ़ते रिज़्वान किसे कहते हैं ? 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**हज़रते उ़स्मान भी जन्नती जन्नती**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हज़रते उ़स्मान भी जन्नती जन्नती

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्ह़ात का रिसाला : **"हज़रते उ़स्मान भी जन्नती जन्नती"** पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे प्यारे, आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की सख़ावत व ह़या से ह़िस्सा नसीब फ़रमा और उसे जन्नतुल फ़िरदौस में बिला ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه : हर शख़्स की दुआ पर्दे में होती है यहां तक कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े । (معجم اوسط، 1/211، حدیث:721)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जन्नती कूंवां

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब मक्कए पाक से हिजरत (Migrate) कर के मदीनए पाक तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरीन की कसरत से पानी की कमी मह़सूस की जाने लगी, बनी ग़िफ़ार के एक शख़्स के पास एक कूंवां था जिस का नाम "रूमा" था वोह इस का एक मश्कीज़ा एक मुद[1] के बदले बेचते थे । मालिके जन्नत,

1..... मुद एक पैमाना है जो 2 रत़्ल या'नी 787.32 ग्राम के बराबर है ।

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : येह चश्मा मुझे जन्नत के चश्मे के बदले बेच दो । उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा और मेरे बच्चों का इस के इ़लावा कोई और कमाने का ज़रीआ़ नहीं है लिहाज़ा मैं इस मुआ़मले की ता़क़त नहीं रखता । जब येह बात ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللهُ عَنْه को पहुंची तो आप ने वोह कूंवां 35 हज़ार दिरहम का ख़रीद कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं वोह कूंवां ख़रीदूं तो क्या आप मेरे साथ भी वैसा मुआ़मला फ़रमाएंगे ? (या'नी जन्नती चश्मे के बदले मुझ से क़बूल फ़रमा लेंगे ?) रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बिल्कुल, ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने वोह कूंवां ख़रीद कर तमाम मुसल्मानों के लिये वक़्फ़ कर दिया है । (معجم کبیر، 2/41، حدیث:1226)

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़ल्लामा अ़ब्दुल बर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़वाले से लिखते हैं कि येह कूंवां एक यहूदी का था । वोह इस का पानी मुसल्मानों को बेचता था । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस कूंएं को ख़रीदने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उस यहूदी से 12000 दिरहम के बदले में आधा कूंवां ख़रीद लिया, जब उस यहूदी को बक़िय्या ह़िस्से से नफ़्अ़ कमाना मुश्किल हो गया तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने 8000 के बदले बक़िय्या ह़िस्सा भी ख़रीद लिया (और तमाम मुसल्मानों पर वक़्फ़ कर दिया) । (تاریخ مدینہ (اردو)، 205)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस मुबारक कूंएं की शानो अ़ज़मत पे लाखों सलाम कि इस मुबारक कूंएं से **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पानी पीना भी साबित है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा यहां से तशरीफ़ ले कर जा रहे थे कि आप की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ की गई कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इसे ख़रीद कर सदक़ा कर दिया है तो आप ने दुआ़ मांगी : मौला ! उ़स्मान के लिये जन्नत लाज़िम कर दे। फिर उस में से पानी मंगवा कर पिया और इर्शाद फ़रमाया : "इस वादी में अ़न्क़रीब बहुत से चश्मे होंगे जो बहुत मीठे होंगे लेकिन बीरे मुज़नी (या'नी बीरे रूमा) उन सब से मीठा होगा।" (سبل الہدی والرشاد، 7/227)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के लिये दुआ़ए मुस्त़फ़ा

अल्लाह पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस कूंएं के ख़रीदने पर येह दुआ़ इर्शाद फ़रमाई थी : "जो बीरे रूमा ख़रीदे वोह जन्नत में सैराब किया जाएगा।" (تاریخ مدینہ لابن شبہ، 1/154 ماخوذا)

"रूमा" उस कूंएं के मालिक का नाम था जिस से (ह़ज़रते) उ़स्माने ग़नी ने ख़रीदा। येह (कूंवां) मस्जिदे क़िब्लतैन के शिमाली जानिब वाक़ेअ़ है, इस का पानी बहुत ही मीठा लज़ीज़ और हलका ज़ूद ह़ज़्म (या'नी जल्द ह़ज़्म होने वाला) है, अब इसे "बीरे उ़स्मान" भी कहते हैं और "बीरे जन्नत" भी, क्यूं कि इस कूंएं की ख़रीद पर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से जन्नत का वा'दा फ़रमाया गया। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/398)

अल्लाह से क्या प्यार है उ़स्माने ग़नी का महबूबे ख़ुदा यार है उ़स्माने ग़नी का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का तआ़रुफ़

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! जामिउ़ल क़ुरआन, तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वाक़िअ़ए फ़ील के छटे (6th) साल मक्कए पाक में पैदा हुए और आप का सिल्सिलए नसब 5 वासित़ों से **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिल्सिलए नसब से जा मिलता है। (تاریخ الخلفاء، ص118) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने आग़ाज़े इस्लाम ही में क़बूले इस्लाम कर लिया था, आप की कुन्यत "अबू अ़म्र" और लक़ब "जामिउ़ल क़ुरआन" है, आप को "साह़िबुल हिज्रतैन" (या'नी दो हिजरतों वाले) कहा जाता है क्यूं कि आप ने पहले ह़बशा और फिर मदीने शरीफ़ की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई। (करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 3, 4)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी की बे मिसाल ख़ुसूसिय्यत

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की भी क्या शान है! **अल्लाह** पाक के नबी का "दामाद" होने की ह़ैसिय्यत से जो ख़ुसूसिय्यत और इन्फ़िरादिय्यत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ह़ासिल हुई, वोह काएनात में किसी और को ह़ासिल न हो सकी, ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक किसी के निकाह़ में किसी नबी की दो बेटियां नहीं आईं लेकिन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वोह ख़ुश नसीब, जन्नती सह़ाबी हैं कि जिन के निकाह़ में किसी और नबी की नहीं बल्कि सारे नबियों के सरदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो साह़िब ज़ादियां एक के बा'द दूसरी निकाह़ में आईं। इसी लिये आप का एक लक़ब "ज़ुन्नूरैन" (या'नी दो नूर वाले) भी है, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर मेरी दस बेटियां भी होतीं तो मैं (एक के बा'द दूसरी से) तुम्हारा निकाह़ कर देता।" (معجم کبیر، 22/436، حدیث:1061)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ग़म

अल्लाह पाक के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا) वफ़ात पा गईं तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी बहुत रोए, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने पूछा : "उ़स्मान क्यूं रोते हो ?" अ़र्ज़ किया : मैं हुज़ूर की दामादी से मह़रूम हो गया हूं, येह सुन कर आप ने इर्शाद फ़रमाया : "मुझ से जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया है कि **अल्लाह** पाक का हुक्म है कि मैं अपनी दूसरी साहिब ज़ादी उम्मे कुल्सूम का निकाह़ तुम से कर दूं बशर्ते कि वोही मह्र हो जो रुक़य्या का था और तुम इस से वोह ही सुलूक करो जो रुक़य्या से किया।" चुनान्चे ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا) का निकाह़ आप से कर दिया गया। दुन्या में ऐसा कोई नहीं जिस के निकाह़ में नबी की दो बेटियां आई हों इस लिये आप को ज़ुन्नूरैन कहा जाता है या'नी दो नूर वाले। मा'लूम हुवा कि हुज़ूर भी नूर हैं और आप की औलाद भी नूर। (مرقاۃ، 10/445، تحت الحدیث:6080, मिरआतुल मनाजीह़, 8/405) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस निस्बत को कितने प्यारे अन्दाज़ में बयान फ़रमाते हैं :

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

दो नूर वाला कहने की एक और वज्ह

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को ज़ुन्नूरैन इस लिये कहा जाता है कि जब आप जन्नत के एक मह़ल से दूसरे मह़ल में तशरीफ़ ले जाएंगे तो आप पर दो बार नूर की तजल्ली ज़ाहिर होगी। (فیض القدیر، 4/399، تحت الحدیث:5379)

नूरे दिलो ऐ़न हैं साह़िबे नूरैन हैं सब के दिल के चैन हैं मोमिनों की जान हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते मौला अ़ली की ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी से मह़ब्बत

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : येह वोह शख़्स है जिस को मलाए आ'ला (या'नी आस्मान के फ़िरिश्तों) में "ज़ुन्नूरैन" पुकारा जाता है। (تاریخ الخلفاء،ص119) मेरे पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत शाने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हुए अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

नबी के नूर दो ले कर वोह ज़ुन्नूरैन कहलाए उन्हें ह़ासिल हुई यूं कुर्बते मह़बूबे रह़मानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दो बार जन्नत ख़रीदी

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मेरे आक़ा व मौला, ह़ज़रते उ़स्माने बा सफ़ा व बा ह़या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शाने पाक बहुत बुलन्द है, आप ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मरतबा जन्नत ख़रीदी, जी हां ! बिल्कुल, एक मरतबा "बीरे रूमा" ख़रीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक़्फ़ कर के और दूसरी बार "जैशे उ़सरत (या'नी ग़ज़्वए तबूक)" के मौक़अ़ पर। ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर मुसल्मानों के पास सामान की कमी देखते हुए पहली दफ़्आ़ एक सो (100) ऊंट, दूसरी मरतबा दो सो (200) ऊंट और तीसरी बार (300) ऊंट देने का वा'दा किया। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान

बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर अपने मुबारक मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मरतबा फ़रमाया : "आज से उ़स्मान (رَضِیَ اللہُ عَنْہ) जो कुछ करे उस पर मुआख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं ।" (ترمذی،5/391،حدیث:3720ملخصًا)

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "आज से उ़स्मान जो कुछ करे उस पर मुआख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं ।" की शर्ह़ में लिखते हैं : या'नी उ़स्मान अब इस के बा'द जो काम भी करें उन्हें मुज़िर (या'नी नुक़्सान पहुंचाने वाला) न होगा । इस फ़रमाने आ़ली का मन्शा (या'नी मत़लब) येह नहीं है कि ह़ज़रते उ़स्मान को गुनाहों की इजाज़त दे दी गई बल्कि येह ऐसा है जैसे परिन्दे के पर काट कर उस से कहा जाए कि जा उड़ता फिर, अब उड़े काहे से, यूं ही हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के दिल पर अपना हाथ रख लिया अब उ़स्मान के दिल में गुनाह करने का ख़याल भी कैसे पैदा हो सकता है । (मिरआतुल मनाजीह़, 8/395)

मुझे अपनी सख़ावत के समुन्दर से कोई क़त़रा अ़त़ा कर दो नहीं दरकार मुझ को ताजे सुल्त़ानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 585)

हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आख़िरी ग़ज़्वा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़्वए उ़सरत ग़ज़्वए तबूक का नाम है और इस ग़ज़्वे में जाने वालों को "जैशे उ़सरत" कहते हैं क्यूं कि येह ग़ज़्वा मुसल्मानों की सख़्त तंगी और बे सामानी की ह़ालत में हुवा, गरमी सख़्त थी, तबूक का मक़ाम मदीनए पाक से छे सो साठ 660 मील दूर था । हु़ज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने लोगों को इस के लिये चन्दा देने का हुक्म दिया । ग़ज़्वए तबूक हु़ज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का आख़िरी ग़ज़्वा है

जो 9 हि. में हुवा, इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई ग़ज़्वा न किया। इस ग़ज़्वे में लश्करे इस्लाम बहुत बड़ा था। ग़ज़्वए बद्र में लश्करे इस्लाम तीन सो तेरह (313) था, उहुद में सात सो (700), हुदैबिया में पन्दरह सो (1500), फ़त्हे मक्का में दस हज़ार (10000) और ग़ज़्वए हुनैन में बारह हज़ार (12000) तबूक में चालीस हज़ार (40000) और सत्तर हज़ार (70000) के दरमियान था। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने तीन बार चन्दे की अपील की, हर बार में ह़ज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने सो, दो सो, तीन सो ऊंट का मअ़ सामान के ए'लान किया, किसी को बोलने का मौक़अ़ ही न दिया, छे सो ऊंट मअ़ सामान का भी ए'लान किया और एक हज़ार अश्रफ़ियों का भी। ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त नव सो पचास (950) ऊंट, पचास (50) घोड़े और एक हज़ार (1000) अश्रफ़ियां पेश कीं फिर बा'द में दस हज़ार (10000) अश्रफ़ियां और पेश कीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/394, 395 मुल्तक़त़न)

दस्ते अ़त़ा खुल गया देखा जो येह माजरा
ग़ाज़ियाने मुस्त़फ़ा बे सरो सामान हैं

शाने उ़स्माने ग़नी ब ज़बाने मौला अ़ली

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه का एक मरतबा ज़िक्रे ख़ैर होने लगा तो नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : अभी अमीरुल मुअमिनीन तशरीफ़ लाएंगे। फिर ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه उन ख़ुश नसीबों में से हैं जिन की शान में क़ुरआने करीम में येह फ़रमान नाज़िल हुवा :

اٰمَنُوْا وَّعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۳﴾ (پ7، المائدۃ:93)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान रखें और नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और **अल्लाह** नेकों को दोस्त रखता है।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 17/91، حدیث:32723)

ख़ुदा भी और नबी भी ख़ुद अ़ली भी उस से हैं नाराज़
अ़दू उन का उठाएगा क़ियामत में परेशानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

"उ़स्मान" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से हज़रते उ़स्माने ग़नी की शान में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿ सख़ावत एक जन्नती दरख़्त है और उ़स्मान उस की शाख़ों में से एक शाख़ हैं। (کنز العمال، جز:11، 6/273، حدیث:32849)

﴾2﴿ एक मरतबा एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया (या'नी हाथ मुबारक मिलाया) और जब तक उस शख़्स ने अपना हाथ न खींचा आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का हाथ न छोड़ा उस शख़्स ने पूछा : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते उ़स्मान कैसे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "वोह जन्नतियों में से एक शख़्स हैं।" (معجم کبیر، 12/309، حدیث:13495)

अल्लाहु ग़नी ह़द नहीं इन्आ़मो अ़त़ा की वोह फ़ैज़ पे दरबार है उ़स्माने ग़नी का

प्यारे नबी की प्यारी सुन्नत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी आप ने पढ़ा कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

सलाम करने वाले से अपना हाथ मुबारक उन के खींचने से पहले न खींचा। आप जब किसी से मुसाफ़हा फ़रमाते तो अपना हाथ खींचने में पहल न फ़रमाते, येह हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत है, काश ! हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه के सदक़े में हम भी सुन्नतों पर अ़मल करने वाले बन जाएं, काश काश काश ! हमारा हर अ़मल सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऐन मुत़ाबिक़ हो। सुन्नत पर अ़मल की तो क्या ही प्यारी फ़ज़ीलत है कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (تاریخ ابن عساکر، 9/343)

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

जन्नती ह़ूर

﴾3﴿ मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो एक सेब मेरे हाथ पर रख दिया गया मैं उसे उलट पलट रहा था कि वोह सेब फट गया और उस में से एक ह़ूर (या'नी जन्नती ख़ूब सूरत औ़रत) निकली, मैं ने पूछा : तू किस के लिये है ? उस ने कहा : ज़ुल्मन शहीद होने वाले हज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान के लिये। (کنز العمال، جزء:13، 7/29، حدیث:36257)

जिस आईने में नूरे इलाही नज़र आए वोह आईना रुख़्सार है उ़स्माने ग़नी का

जन्नती साथी

﴾4﴿ हर नबी का कोई साथी होता है मेरे साथी (या'नी जन्नत में) उ़स्मान हैं। (ترمذی، 5/390، حدیث:3718)

ह़कीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : मेरे ख़ुसूसी साथी हज़रते उ़स्मान होंगे

वरना मुत़्लक़न साथी और बहुत से खुश नसीब ह़ज़रात भी होंगे। चुनान्चे बा'ज़ रिवायात में है कि मेरे ख़ास दोस्त अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) होंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/393, 6070:مرقاۃ،10/432،تحت الحدیث)

हिदायत याफ़्ता

﴾5﴿ ह़ज़रते मुर्रह बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुना जब आप ने फ़ितनों का ज़िक्र किया और उन्हें बहुत क़रीब बताया तो एक शख़्स चादर पोश (या'नी चादर ओढ़े हुए) गुज़रा तो आप ने फ़रमाया : उस दिन येह हिदायत पर होगा, मैं उठ कर उस शख़्स की त़रफ़ बढ़ा तो वोह "उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान" थे, ह़ज़रते मुर्रह बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने उन का चेहरा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने कर के अ़र्ज़ की : (क्या) येह ? फ़रमाया : हां।

(ترمذی،5/393،حدیث:3724،ابن ماجہ،1/79،حدیث:111)

जो दिल को ज़िया दे जो मुक़द्दर को जिला दे   वोह जल्वए दीदार है उ़स्माने ग़नी का

चार याराने नबी जन्नती जन्नती

ह़ज़रते नज़्ज़ाल बिन सब्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक दिन हम ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को खुश पाया तो अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! अपने यारों का ह़ाल हम से बयान कीजिये। फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब सह़ाबा मेरे यार हैं। हम ने अ़र्ज़ की : अपने ख़ास यारों का तज़्किरा कीजिये। फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई सह़ाबी नहीं कि मेरा यार न हो। हम ने अ़र्ज़ की : (ह़ज़रते) अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) का ह़ाल बयान कीजिये। फ़रमाया : येह वोह साहि़ब हैं कि **अल्लाह** पाक ने जिब्रीले अमीन और नबिय्ये करीम

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक पर इन का नाम "सिद्दीक़" रखा, वोह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा थे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें हमारे दीन की इमामत को पसन्द फ़रमाया तो हम ने अपनी दुन्या में भी इन्हीं को पसन्द किया। हम ने अ़र्ज़ की : (हज़रते) उ़मर बिन ख़त्ताब (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) के बारे में बताइये। फ़रमाया : येह वोह साहिब हैं जिन का नाम **अल्लाह** करीम ने "फ़ारूक़" रखा, इन्हों ने हक़ को बातिल से जुदा कर दिया, मैं ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़र्ज़ करते सुना कि इलाही ! उ़मर बिन ख़त्ताब के सबब इस्लाम को इ़ज़्ज़त दे। फिर हम ने अ़र्ज़ की : (हज़रते) उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) के बारे में भी कुछ बताइये। हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने फ़रमाया : येह वोह साहिब हैं कि मलाए आ'ला (या'नी फ़िरिश्तों) में "ज़ुन्नूरैन" पुकारे जाते हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो शहज़ादियों के शौहर हुए और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये जन्नत में एक मकान की ज़मानत फ़रमाई है। (کنز العمال، ج:13، 7/101، حدیث36694) (फ़तावा रज़विय्या, 30/630)

रह़मतें हों हर सह़ाबी पर मुदाम और ख़ुसूसन चार यारों को सलाम

हर सह़ाबिये नबी !..... जन्नती जन्नती
हज़रते सिद्दीक़ भी !..... जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी !..... जन्नती जन्नती
हज़रते उ़स्मान भी !..... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली !..... जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी !..... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी !..... जन्नती जन्नती

बैअ़ते रिज़्वान किसे कहते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जी क़ा'दा 6 हि. में उ़म्रे के इरादे से मदीनए पाक से मक्कए पाक तशरीफ़ लाए, जब मक़ामे हुदैबिया पहुंचे तो कुरैश डर गए, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को मक्कए पाक अपना पैग़ाम अ़ता फ़रमा कर भेजा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उ़म्रे के इरादे से तशरीफ़ लाए हैं, आप का इरादा जंग करने का नहीं है और इन से येह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसल्मान वहां हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि अ़न्क़रीब मक्कए पाक फ़त्ह़ होगा और **अल्लाह** पाक अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा । ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) को भेजने के लिये ख़ास इस लिये किया गया क्यूं कि वहां के ग़ैर मुस्लिमों पर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) के बहुत एह़सानात थे वोह लोग आप का एह़तिराम करते थे, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه कुरैश के सरदारों के पास तशरीफ़ ले गए और उन्हें ख़बर दी । उन्हों ने कहा कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस साल तो तशरीफ़ न लाएं और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से कहा कि अगर आप ख़ानए का'बा शरीफ़ का त़वाफ़ करना चाहें तो कर लें । ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : ऐसा नहीं हो सकता कि मैं रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ करूं । इधर हुदैबिया में मौजूद सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने कहा : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बड़े ख़ुश नसीब हैं जो का'बा शरीफ़ पहुंचे और त़वाफ़ किया होगा । हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जानता हूं कि वोह हमारे बिग़ैर त़वाफ़ न करेंगे । इतने में येह

ख़बर मश्हूर हो गई कि हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शहीद कर दिये गए हैं। इस पर मुसल्मानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से मुक़ाबले में साबित क़दम रहने की बैअ़त ली, येह बैअ़त एक बड़े कांटे वाले दरख़्त के नीचे हुई जिसे अ़रब में "समुरह" कहते हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना बायां हाथ मुबारक सीधे हाथ मुबारक में लिया और फ़रमाया : येह उ़स्मान की बैअ़त है और दुआ फ़रमाई : **या अल्लाह** पाक! उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) तेरे और तेरे रसूल (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के काम में है। इसे बैअ़ते रिज़्वान इस लिये कहते हैं कि इस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम की सूरए फ़त्ह़, आयत नम्बर 18 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِیْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ عَلَیْهِمْ وَ اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِیْبًا ﴿۱۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे तो **अल्लाह** ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया।

(مدارج النبوت، 2/209 ملخصًا)

बैअ़त का सुबूत

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! बैअ़ते रिज़्वान के इस वाक़िए़ से मा'लूम होता है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब जानते थे कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शहीद नहीं किये गए नीज़

येह भी मा'लूमा हुवा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे इन्तिहा प्यार करते थे जभी तो आप ने अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करने से इन्कार फ़रमा दिया। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : गोया येह बैअ़त रिज़ाए इलाही का तमग़ा मिलने का ज़रीआ़ थी। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने लोगों से इस्लाम पर भी बैअ़त ली है नेक आ'माल करने पर भी और गुनाहों से बचने पर भी, किसी से सुवाल न करने पर भी और किसी ख़ास अ़मल पर भी, येह बैअ़तें मौजूदा मुरव्वजा बैअ़तों की अस्ल हैं जो औलियाउल्लाह (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم) से की जाती हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/397)

अमीरे अहले सुन्नत से निस्बत की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों और औलियाए किराम (رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم) से शुरूअ़ से ही बैअ़त का सिल्सिला चला आ रहा है, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! हमारी ख़ुश क़िस्मती है कि इस गुनाहों भरे दौर में **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े से हमें आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल नसीब हुवा। बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ दा'वते इस्लामी के बानी होने के साथ साथ शरीअ़तो त़रीक़त के कामिल पीरो मुर्शिद हैं, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! आप को चारों सिल्सिलों (क़ादिरिय्या, चिश्तिय्या, सोह्रवर्दिय्या और नक़्श बन्दिय्या) समेत मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों से कई और भी सिल्सिलों की

इजाज़तें और ख़िलाफ़तें हासिल हैं, मगर आप अपने ज़रीए सय्यिदी हुज़ूरे ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मुरीद बनाते हैं, जैसे ग़ौसे पाक तमाम पीरों के पीर हैं ऐसे ही आप का सिल्सिलए क़ादिरिय्या दीगर तमाम सिल्सिलों पर फ़ज़ीलत रखता है। वोह आ़शिक़ाने औलिया जो अब तक किसी पीरे कामिल के मुरीद नहीं, मेरा उन्हें मदनी मश्वरा है कि ईमान की हिफ़ाज़त, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेहन पाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत के ज़रीए पीराने पीर, पीरे दस्त गीर, सय्यिदी हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुरीद बन कर दा'वते इस्लामी के माहोल से वाबस्ता हो जाएं, अमीरे अहले सुन्नत से निस्बत की कैसी कैसी बरकतें हासिल होती हैं आप को शौक़ दिलाने के लिये एक मदनी बहार पेश करता हूं : एक इस्लामी बहन का कहना है कि उन की रक़म फंस गई और इस वज्ह से घर के अख़राजात पूरे करना मुश्किल हो गया, बिल आख़िर ग़ुर्बत के वोह दिन आ गए कि हाथ बिल्कुल ख़ाली हो गए और घर का राशन ख़रीदने की भी ताक़त न रही, फ़ाक़ों से तंग आ कर सर छुपाने का ठिकाना अपना घर बेच दिया, वोह इस्लामी बहन कहती हैं कि मैं ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस मुसीबत से नजात की दुआ़एं मांगीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! ग़मों की शाम ढलने लगी और दुआ़ओं का असर ज़ाहिर होने लगा, हुवा कुछ यूं कि वोह वलिय्ये कामिल अमीरे अहले सुन्नत की मुरीद बन गईं, सिल्सिलए अ़त्तारिय्या के साथ साथ हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का फ़ैज़ान इस त़रह़ मिलना शुरूअ़ हुवा कि उन्हों ने अमीरे अहले सुन्नत का शजरए अ़त्तारिय्या क़ादिरिय्या पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस की बरकतें ज़ाहिर होने

लगीं और एक एक कर के उन की परेशानियां ह़ल होती गईं और उन की डूबी हुई रक़म भी वापस मिल गई। उन्हों ने मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में दाख़िला ले लिया और क़ुरआने करीम दुरुस्त पढ़ने, सीखने की सआ़दत ह़ासिल हुई। (अदाकारी का शौक़ कैसे ख़त्म हुवा, स. 27)

अल्लाह पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

वफ़ात शरीफ़

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बारह साल ख़िलाफ़त फ़रमा कर 18 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम सिन 35 हिजरी में बरोज़ जुमुआ़ रोज़े की ह़ालत में तक़रीबन 82 साल की उ़म्रे मुबारक पा कर निहायत मज़्लूमिय्यत के साथ शहीद किये गए। शहादत के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में फ़रमाते सुना : बेशक उ़स्मान को जन्नत में आ़लीशान दूल्हा बनाया गया है। (ریاض النضرۃ، 3/73، 76)

अल्लाह पाक की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मिली तक़्दीर से मुझ को सह़ाबा की सना ख़्वानी
मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

ह़िसाब न लेना

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब से दुआ़ की : मौला ! मेरा उ़स्मान बड़ा ही शर्मीला है, तू कल

क़ियामत में इस का हि़साब न लेना कि वोह शर्मो ह़या की वज्ह से तेरे सामने खड़े हो कर हि़साब न दे सकेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/393, مرقاۃ،10/432،تحت الحدیث:6070ملتقطا)

बिला हि़साब हो जन्नत में दाखि़ला या रब पड़ोस खुल्द में सरवर का हो अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علی مُحَمَّد

नोट : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की मुबारक सीरत के ह़वाले से मज़ीद पढ़ने के लिये अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला "करामाते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ" पढ़िये। येह रिसाला दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउन लोड भी किया जा सकता है।

फ़ेह़रिस

जन्नती कूंवां....1	हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आखि़री ग़ज़्वा..7
ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के लिये दुआए मुस्त़फ़ा..3	शाने उ़स्माने ग़नी ब ज़बाने मौला अ़ली..8
ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी की	प्यारे नबी की प्यारी सुन्नत....9
बे मिसाल ख़ुसूसिय्यत....4	जन्नती साथी....10
ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ग़म....5	हिदायत याफ़्ता....11
ह़ज़रते मौला अ़ली की	चार याराने नबी जन्नती जन्नती....11
ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी से मह़ब्बत....6	बैअ़ते रिज़्वान किसे कहते हैं ?....13
दो बार जन्नत ख़रीदी....6	वफ़ात शरीफ़....17

मिली तक़्दीर से मुझ को सह़ाबा की सना ख़्वानी

मिली तक़्दीर से मुझ को सह़ाबा की सना ख़्वानी
मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी
रखा मह़सूर उन को बन्द उन पर कर दिया पानी
शहादत ह़ज़रते उ़स्मान की बेशक है लासानी
नबी के नूर दो ले कर वोह ज़ुन्नूरैन कहलाए
उन्हें ह़ासिल हुई यूं क़ुर्बते मह़बूबे रह़मानी
नबी ने तेरे बदले "बैअ़ते रिज़्वां" में की बैअ़त
कहा क़ुरआन ने दस्ते नबी को दस्ते यज़्दानी
तुम्हीं को जामेए़ क़ुरआन का ह़क़ ने दिया मन्सब
अ़त़ा क़ुरआं को कर के जम्अ़ की उम्मत को आसानी
ख़ुदा भी और नबी भी ख़ुद अ़ली भी उस से हैं नाराज़
अ़दू उन का उठाएगा क़ियामत में परेशानी
अ़दावत और कीना उन से जो रखता है सीने में
वोही बद बख़्त है मल्ऊ़न है मरदूद शैत़ानी
हम उन की याद की धूमें मचाएंगे क़ियामत तक
पड़े हो जाएं जल कर ख़ाक सब आ'दाए उ़स्मानी
इमामल अस्ख़िया ! कर दो अ़त़ा ह़िस्सा सख़ावत का
क़नाअ़त हो इ़नायत, दें न दौलत की फ़रावानी
मुझे अपनी सख़ावत के समुन्दर से कोई क़त़रा
अ़त़ा कर दो नहीं दरकार मुझ को ताजे सुल्त़ानी
उ़लुव्वे शान का क्यूंकर बयां हो आप की प्यारे
ह़या करती है मौला आप से मख़्लूक़े नूरानी
सुख़न आ कर यहां अ़त्त़ार का इत्माम को पहुंचा
तेरी अ़ज़मत पे नात़िक़ अब भी हैं आयाते क़ुरआनी

(वसाइले बख़्शिश, स. 584)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

रहमतें हों हर सहाबी पर मुदाम
और ख़ुसूसन चार यारों को सलाम

हर सहाबिये नबी.....जन्नती जन्नती
सब सहाबियात भी.....जन्नती जन्नती
चार याराने नबी.....जन्नती जन्नती
हज़रते सिद्दीक़ भी.....जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी.....जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी.....जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली.....जन्नती जन्नती
हैं हसन हुसैन भी.....जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी.....जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी.....जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी.....जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी.....जन्नती जन्नती

978-969-722-197-4
01082205

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net